दवा परीक्षण का एक शर्मनाक अध्याय

हाल ही में दवा परीक्षणों को लेकर एक सनसनीखेज खुलासा हुआ है। यह पता चला है कि संयुक्त राज्य अमरीका द्वारा किए गए एक दवा परीक्षण के दौरान कम से कम 600 मरीज़ों को सिफलिस की दवा से वंचित रखा गया था। यह परीक्षण ग्वाटेमाला में 1946-48 के दौरान किया गया था।

वेलेस्ली कॉलेज, मैसाचुसेट्स की इतिहासज्ञ सुज़न रेवरबाय ने इस परीक्षण से सम्बंधित अप्रकाशित दस्तावेज़ों के अध्ययन के आधार पर जो कुछ उजागर किया है वह भयावह है। यूएस सरकार ने पूरे मामले में ग्वाटेमाला सरकार से माफी मांगी है।

रेवरबाय बताती हैं कि 1946 में यह पता चल चुका था कि सिफलिस का इलाज पेनिसिलीन से संभव है। उक्त अध्ययन यह जानने के उद्देश्य से किया गया था कि क्या पेनिसिलीन की मदद से सिफलिस की रोकथाम भी हो सकती है। शोधकर्ता यह भी जानना चाहते थे कि क्या एक बार पेनिसिलीन से उपचार के बाद व्यक्ति को पुनः संक्रमण हो सकता है। यह अध्ययन ग्वाटेमाला के एक डॉक्टर युआन फ्यून्स और यू.एस. पब्लिक हेल्थ सर्विस के शोधकर्ता जॉन कटलर ने मिलकर किया था।

ग्वाटेमाला में वेश्यावृत्ति कानूनन स्वीकृत थी और कैदियों को वेश्याएं उपलब्ध करवाना आम बात थी। तो शोधकर्ताओं ने कुछ कैदियों को शराब उपलब्ध करवाई और उनके पास ऐसी वेश्याएं भेजीं जिनके बारे में मालूम था कि उन्हें सिफलिस है। मगर जब इस तरीके से संक्रमण पर्याप्त नहीं फैला और कैदियों में सिफलिस के पर्याप्त मामले नहीं उभरे, तो शोधकर्ताओं ने प्रत्यक्ष रूप से उन्हें संक्रमित करने का तरीका अपनाया। उनकी बांहों, गालों और लिंग पर खरोंच लगाकर सिफलिस के कीटाणुओं में भीगा रुई का फोहा उस पर बांध दिया जाता था। इस तरीके से भी संक्रमण पैदा करने में मुश्किलें आईं। अंततः 1948 में अध्ययन रोक दिया गया। मगर बाद में पता चला कि 696 में से 427 व्यक्ति संक्रमित हुए थे।

टस्केजी प्रयोग

बताते हैं कि इनमें से 369 को ही पेनिसिलीन उपचार दिया गया था।

बाद में इसी तरह का अध्ययन यू.एस. में टस्केजी नामक स्थान के एक मानसिक चिकित्सालय में भी किया गया था। दरअसल रेवरबाय टस्केजी अध्ययन के दस्तावेज़ देख रही थीं और उनके हाथ लग गए ग्वाटेमाला के कागज़ात। इनमें स्पष्ट लिखा था कि कैदियों को जानबूझकर संक्रमित करने की कोशिश की गई थी। काफी अध्ययन के बाद रेवरबाय ने अपनी रिपोर्ट यू.एस. रोग नियंत्रण केंद्र के भूतपूर्व निदेशक को दिखाई और धीरे-धीरे यह स्थापित हुआ कि ग्वाटेमाला के अध्ययन में कई ऐसे कार्य किए गए थे जो नैतिकता के विरुद्ध थे। हाल ही में यू.एस. सरकार ने ग्वाटेमाला सरकार से इस सम्बंध में क्षमा याचना की है और गहन जांच का वायदा किया है।

आजकल भारत में दवा परीक्षण ज़ोर-शोर से चल रहे हैं। हाल में इन परीक्षणों में बरती जा रही लापरवाही के समाचार आए हैं। रेवरबाय का कहना है कि यदि उक्त परीक्षण किसी निजी कंपनी द्वारा किया गया होता तो उन्हें सच्चाई कभी पता न चलती। भारत को इससे सबक लेना चाहिए। ***(स्रोत फीचर्स)***